स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स
RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

चित्र साभार:
http://cache2.allpostersimages.com/p/LRG/17/1743/GYW3D00Z/posters/werner-forssman-german-physiologist-and-pioneer-in-heart-research.jpg

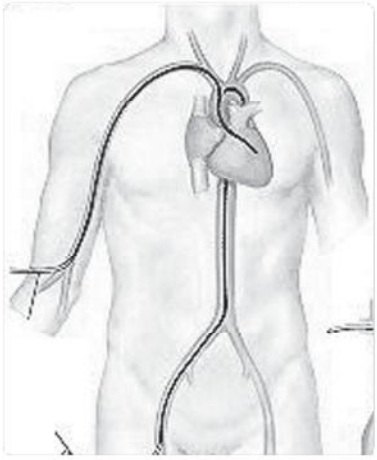

नोबेल पुरस्कारः बारास्ता मोहब्बत

आजकल बहुत आसानी से डॉक्टर आपके हृदय में ट्यूब्स (केथेटर) वगैरह डाल देते हैं, मगर एक समय था जब केथेटर डालना तो दूर हृदय को स्पर्श करने की ज़ुर्रत भी कोई न करता।

बात 1929 की है। उस समय हमारे नायक वर्नर फोर्समैन मात्र 25 साल के थे। उस समय वे बर्लिन के नज़दीक एक अस्पताल में प्रशिक्षु सर्जन थे। वे स्वयं अपने हृदय में केथेटर डालकर देखना चाहते थे। ज़ाहिर है उन्हें इसकी अनुमति नहीं मिली।

खैर, फोर्समैन ने तो ठान ली थी कि दिल में घुसाकर ही तमाशा देखेंगे। उन्हें तो बस ऑपरेशन थिएटर के उपयोग की अनुमति की दरकार थी। इसके लिए उन्होंने अस्पताल की मुख्य नर्स गर्डा डिटज़ेन के चक्कर काटना शुरू किया। खुद फोर्समैन के शब्दों में वे डिटज़ेन के आसपास ऐसे मंडराते थे जैसे "कोई बिल्ली मलाई से भरे मर्तबान के आसपास मंडराती है।" वे डिटज़ेन को दावतों पर बुलाते, उन्हें अपनी किताबें देते, और दोनों घंटों चिकित्सा के प्रति अपने लगाव की बातें करते।

अंततः उन्होंने हृदय में केथेटर डालने की बात छेड़ी। डिटज़ेन ने इसके लिए अपने दिल की पेशकश की। फोर्समैन को और क्या चाहिए था। दोनों ऑपरेशन थिएटर पहुंचे मगर वहां डिटज़ेन का दिल टूट गया क्योंकि फोर्समैन ने उन्हें तो ऑपरेशन टेबल से बांधकर पटक दिया और खुद अपनी बांह की एक शिरा में केथेटर घुसाया और घुसाते-घुसाते उसे दिल तक पहुंचा दिया – कुल 75 से.मी. नली अंदर गई थी। हां, वे स्थानीय निश्चेतक का उपयोग करना नहीं भूले थे। इसी हालत में वे एक्सरे कक्ष में पहुंचे और अपना एक्सरे निकलवाया ताकि अपने दावे को प्रमाणित कर सकें।

उस समय जो भी हुआ होगा, 1956 में फोर्समैन को अन्य दो वैज्ञानिकों के साथ हृदय केथेटरीकरण के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी